बाजरा की उन्नत उत्पादन तकनीक

बाजरा ह्रदय के लिए बहुत अच्छा होता हैं। कोलेस्ट्रॉल को नियंत्रित करता हैं। मधुमेह को रोकने मे मदद करता हैं। पाचन में मदद करता हैं। कैंसर से बचाव में सहायक हैं। शरीर को डिटॉक्सीफाई भी करता हैं। अस्थमा को रोकने मे सक्षम हैं। मांशपेशियों के लिए अच्छा हैं। वजन काम करने में मदद करता हैं।

बाजरा की अच्छी उपज देने वाली उन्नतशील किस्मे कौन-कौन सी है?

जवाहर बाजरा 3 एवं 4, पी.सी.383, पी.सी.701,आई.सी.एम.व्ही.221 एवं राज 171

बाजरा की बुवाई के लिए खेत की तैयारी किस तरह करें?

2 बार कल्टीवेटर से जुताई करना चाहिए इसके बाद हैरो चलाकर महीन बीज शैया तैयार करना चाहिए और खेत को समतल करना चाहिए, जिससे खेत मे पानी न रुक सके।

बाजरा की बुवाई का सबसे उपयुक्त समय क्या रहता है ?

मध्य जून से जुलाई अन्त तक बुवाई करना उपयुक्त रहता हैं।

बुवाई के लिए एक एकड़ में कितना बीज लगता है ?

3 किग्रा/एकड़ पर्याप्त होता हैं।

बुवाई से पहले बीजोपचार कैसे करें?

बीज उपचार हेतु पहले ट्राइकोडर्मा हार्जियानम @ 4 ग्राम/किग्रा) या थीरम 75% @ 3 ग्राम/किग्रा बीज से उपचारित करना चाहिए। नाइट्रोजन की उपलब्धता बढ़ाने के लिए एजोस्पिरिलम 10 मिली/किग्रा बीज एवं फास्फोरस की घुलनशीलता बढ़ाने हेतु पी.एस.बी. कल्चर 10 मिली प्रति किग्रा बीज से उपचारित करना चाहिए।

बुवाई कौन सी विधि से करें?

कतार में सामान्य सीड ड्रिल या मेढ़-नाली विधि से बुवाई करना चाहिए।

बुवाई के लिए कतार से कतार एवं पौध से पौध की दूरी कितना रखें?

कतार से कतार की दूरी 45 सेंमी (17.72 इंच) और कतार में पौधे से पौधे की दूरी 12 से 15 सेमी (4.72 से 5.91 इंच) एवं 2-3 सेमी गहराई रखना चाहिए।

अच्छा उत्पादन प्राप्त करने के लिए कौन-कौन से खाद एवं उर्वरक कितनी मात्रा में और कब-कब प्रयोग करें?

सड़ी गोबर की खाद 5 ट्रॉली बुवाई से पहले अंतिम जुताई के समय खेत में मिल देना चाहिए। ज्वार के लिए अनुशंसित उर्वरक नत्रजन : फास्फोरस : पोटाश अनुपात 32:16:8 किग्रा प्रति एकड़ होता है । इसके लिए डी.ए.पी. 34 किग्रा, युरिया 26 किग्रा एवं एम.ओ.पी. 13 किग्रा प्रति एकड़ की दर से बुवाई के समय डालें। बुवाई के 30-35 दिनों के बाद में 26 किग्रा प्रति एकड़ यूरिया का प्रयोग करें।

बाजरा के साथ कौन-कौन सी अन्त:वर्तीय फसले ले सकते है?

अन्त:वर्तीय फसले जैसे बाजरा+उडद/मूंग (2:2) लगाने से उडद/मूंग की लगभग 1 क्विंटल/एकड़ तक अतिरिक्त उपज मिलती है।

बाजरा में खरपतवार उग आए तो कैसे नियंत्रण करें?

खरपतवार नियंत्रण हेतु कतारों के बीच व्हील हो या डोरा बुवाई के 15 से 20 दिन बाद एवं 30 से 35 दिन बाद चलाए। रासायनिक नियंत्रण में एट्राजीन 0.4 से 1 किलो प्रति एकड़ बोनी के 0-3 दिन पर छिड़काव करना चाहिए । चौड़ी पत्तियों के खरपतवारों के नियंत्रण हेतु बोनी के 25-30 दिन पर 2,4 डी 500 मिली/एकड़ छिड़काव करना चाहिए।

बाजरा में कौन-कौन से कीट लगते है और उनका प्रबन्धन कैसे करें?

तना मक्खी : इल्ली पौधे के तने को अंदर से खाकर नष्ट कर देती है। इल्ली के द्वारा तने को खाने से वो काफी कमजोर हो जाता हैं। जिससे तेज हवा चलने पर पौधा टूटकर गिर जाता है। इसके नियंत्रण हेतु साइपरमेथ्रिन 10 : ई.सी. @ 300 मिली प्रति एकड़ का छिड़काव करना चाहिए।

तना बेधक : तना बेधक पतंगे पत्तियों पर अण्डे देते है। इनकी इल्ली गोभ में घुसकर पौधों को नष्ट कर देता है। पौधों पर यह 20-25 दिन की अवस्था पर प्रकोप होता है। इसके नियंत्रण हेतु कार्बोफ्यूरॉन3 जी. @ 3 कि.ग्रा. प्रति एकड़ का भुरकाव करना चाहिए।

बाजरा में कौन-कौन से रोग लगते है उनका प्रबंधन कैसे करें?

अरगट : रोगग्रस्त बालों से हल्के गुलाबी रंग का चिपचपा शहद जैसा गाढ़ा रस निकलने लगता है जो बाद में गहरे भूरे रंग का हो जाता है। इसके नियंत्रण के लिए भुट्टे निकलते समय जिनेब @ 1 किग्राध्एकड़ या मैन्कोजेब (डाइथेन एम-45) / 600 ग्राम/एकड़ 3 दिन के अंतराल पर 3 छिड़काव करने पर प्रकोप कम होता हैं।

हरित बाल रोग : इस रोग के लगने से पौधे की पत्तियां पीली दिखाई देने लगती है। रोग बढ़ने से पौधों की निचली पत्तियों पर सफेद रंग का पाउडर दिखाई देने लगता हैं और उनकी बाल काफी समय तक हरी दिखाई देती हैं। इसकी रोकथाम के लिए मेटालेक्जिल (एप्रन एसडी-35) @ 6 ग्राम प्रति किग्रा बीज से उपचारित कर बोनी करे।

बाजरा की कटाई-गहाई कब और कैसे करें?

बाजरा की कटाई के लिए सबसे अच्छा समय तब होता हैं जब पत्तियां पीली पड़ जाए एवं दानों के तल पर काले धब्बे दिखने लगे, दानें कठोर हो जाए तब बाजरा की बालियों को काट कर सुखाया जाता हैं। सुखाने के बाद थ्रेसर द्वारा इसकी गहाई की जाती हैं।

बाजरा के दानों का भण्डारण कैसे करें?

दानो को धूप मे अच्छी तरह 10 % नमी स्तर से नीचे सुखाना चाहिए जिससे भंडारण में लगने वाले कीटों का आक्रमण कम होता हैं। गोदाम में बोरों में भरकर भण्डारित करना चाहिए।

दीनदयाल शोध संस्थान

कृषि विज्ञान केन्द्र मझगवाँ, सतना (म.प्र.)

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें : डॉ.अजय चौरसिया, मोबाइल नं. 9407018060, ईमेल : kvksatna@dri.org.in